आखर हिंदी पत्रिका; e-ISSN-2583-0597 खंड 2/अंक 4/दिसंबर 2022
Received:02/12/2022; Accepted:09/12/2022; Reviewed: 17/12/2022; Published:24/12/2022

आचार्य.महावीर प्रसाद द्विवेदी का अर्थशास्त्रीय चिन्तन

- डॉ. रामेश्वर वरशिळ
सहायक प्राध्यापक,
मिलिंद विज्ञान महाविद्यालय,
नागसेनवन, औरंगाबाद (महाराष्ट्र) 431004
मो. 8668292761
ईमेल - rswarshil100@gmail.com

डॉ. रामेश्वर वरशिळ , आचार्य.महावीर प्रसाद द्विवेदी का अर्थशास्त्रीय चिन्तन , आखर हिंदी पत्रिका, खंड 2/अंक 4/दिसंबर 2022, (287-293)

"विदेशी वस्त्र क्यों हम ले रहे हैं?/ वृथा धन देश का क्यों दे रहे हैं?/ न सूझे है अरे भारत भिखारी !/ गई है हाय तेरी बुद्धी मारी!/ हजारों लोग भूखों मर रहे हैं!/ पेड़ वे आज या कल कर रहे हैं।/ महा अन्याय हा हा हो रहा है; / कहें क्या कुछ नहीं जाता कहा है।/ मरें असगर, बिसेसर और काली; / भरे घर ग्राण्ट, ग्राहम और राली ।"

तत्कालीन भारतीय स्थिति का वर्णन द्विवेदीजी ने अपनी 'स्वदेशी वस्त्र का स्वीकार' इस लम्बी कविता में किया है। यह कविता आव्हानपरक शैली में लिखी गई है। जिसको जुलाई, 1903 ई.की 'सरस्वती' पत्रिका में प्रकाशित किया गया था। इस कविता में द्विवेदीजी की अर्थशास्त्रीय दृष्टि का भी पता चलता है।

आ. महावीर प्रसाद द्विवेदी ने साहित्य के क्षेत्र में अपना अनमोल ऐसा योगदान दिया है इसलिए उन्हीं के नाम से उस युग को जाना और पहचाना जाता है। एक युग दृष्टा के रूप में द्विवेदीजी की पहचान है क्योंकि उन्होंने हिंदी भाषा और साहित्य को एक नई दिशा देने का काम किया है। भाषा और साहित्य के क्षेत्र में ही उन्होंने अपनी कलम नहीं चलाई तो अर्थशास्त्र के क्षेत्र में भी उन्होंने अपनी कलम चलाई है। भारतीय अर्थशास्त्र के इतिहास में 'सम्पत्तिशास्त्र' अर्थशास्त्र पर लिखी गई हिंदी की पहली पुस्तक है, साथ ही ब्रिटिश काल की भारतीय अर्थव्यवस्था को उजागर करने वाली हिंदी की एकमात्र पुस्तक है। इसका महत्त्व इस बात में भी है कि इस तरह का अर्थशास्त्रीय चिन्तन प्रस्तुत करने वाली हिंदी में कोई भी पुस्तक अब तक नहीं लिखी गयी।

इसलिए उनके अर्थशास्त्रीय विचारों पर और उनके 'सम्पत्तिशास्त्र' इस ग्रंथ पर चिन्तन और अनुसंधान की आज भी आवश्यकता है।

द्विवेदीजी में वदान्यता और मितव्ययिता का असाधारण संयोग था। वे अपनी आवश्यकताएँ बहुत ही सीमित रखते थे। झांसी में आय के एक तिहाई भाग में ही सब काम चला लेते थे। अपने 'सम्पत्तिशास्त्र' के नियमों को उन्होंने अपने जीवन में चरितार्थ किया था । उनका सिद्धान्त था -

"इदमेव हि पांडित्यमित्रमेव विदग्धता ।

अयमेव परो धर्मो यदायान्नधिको व्यय: ॥"[1]

वे अपने आय-व्यय का पैसे-पैसे का हिसाब रखते थे । बाहर से आनेवाले पत्रों, अखबारों, पैकटों आदि के बन्धनों और सारे कागदों का मितव्ययिता के साथ उपयोग करते थे।

आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी ने अर्थशास्त्रीय चिन्तन पर दो पुस्तके लिखी है, वे है 'सम्पत्तिशास्त्र' और 'औद्योगिकी' ये दोनों हिंदी में लिखी गई अपने ढंग की अर्थशास्त्रीय चिन्तन की शुरूआत करने वाली प्रारंभिक किन्तु महत्त्वपूर्ण पुस्तके हैं। द्विवेदीजी अपनी तमाम पुस्तकों में 'सम्पत्तिशास्त्र' को सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण मानते थे। उन्होंने अपने 'आत्म-निवेदन में एक स्थल पर लिखा है "समय की कमी के कारण मैं विशेष अध्ययन न कर सका। इसी से 'सम्पत्तिशास्त्र' नामक पुस्तक को छोड़कर और किसी अच्छे विषय पर मैं कोई नई पुस्तक न लिख सका।'"[2]

द्विवेदीजी का मानना है कि 'इकोनोमिक्स' को 'अर्थशास्त्र' की जगह 'सम्पत्तिशास्त्र' कहना अधिक संयुक्तिक होगा, क्योंकि अर्थ शब्द के अनेक अर्थ होते है, "जिससे हिंदी जानने वाले के मन में वह भाव उदित नहीं होता। उन्हीं के शब्दों में "सम्पत्तिशास्त्र' को अंग्रेजी में 'पोलिटिकल इकानमी' कहते हैं। इस देश में किसी ने इसका नाम अर्थशास्त्र रक्खा है। परंतु यह नाम इस शास्त्र का ठिक वाचक नहीं जान पड़ता । क्योंकि 'अर्थ' शब्द के अनेक अर्थ होते हैं। केवल हिंदी जानने वालों के मन में 'सम्पत्ति' या 'धन' शब्दों के सुनने से तत्काल जो भाव उदित हो सकता है वह 'अर्थ' शब्द के सुनने से नहीं हो सकता । 'धनविज्ञान', 'सम्पत्तिविज्ञान' या 'सम्पत्तिशास्त्र' आदि इस शास्त्र का नाम रखा जाय तो वह इस शास्त्र के उद्देश्य का विशेष बोधक हो और साधारण आदमियों की भी समझ में उसका मतलब झट आ जाए । 'अर्थशास्त्र' कहने से यह बात नहीं हो सकती। इसी से हमने इस पुस्तक का नाम 'सम्पत्तिशास्त्र' रखना उचित समझा ।"[3] अंग्रेजी भाषा में इस विषय से सम्बन्धित नौ पुस्तके, बंगला, उर्दू, मराठी और गुजराती भाषाओं में लिखी गयी दो-दो पुस्तकों से द्विवेदी जी ने 'सम्पत्तिशास्त्र' के लेखन में सहयोग लिया है, इसके अलावा माधवराव सम्प्रे की हिन्दी में लिखी एक अप्रकाशित पुस्तक से भी उन्होंने सहयोग लिया है। इन पुस्तकों के साथ उन्होंने अनेक भाषाओं की पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित इस विषय के लेखों

से भी सहायता ली है। सरकार की कितने ही व्यापार- व्यवसाय, सम्बन्धी रिपोर्टो से भी उन्होंने आँकड़े प्रस्तुत किए हैं। इससे पता चलता है कि द्विवेदीजी ने कितने अध्ययन से यह पुस्तक लिखी है । वे लिखते हैं - "हमने और ग्रंथकारों की सिर्फ वही बाते ग्रहण की है जिन्हें हमने निर्भ्रान्त समझा है, अथवा जो इस देश की साम्पत्तिक अवस्था पर घटित हो सकती है।"[4] यानी द्विवेदी के विवेचन के मूल में है भारत की अर्थ व्यवस्था । भारत की साम्पत्तिक अवस्था में कई तरह का अनोखापन है जिसके कारण पाश्चात्य सम्पत्तिशास्त्र के कितने ही नियम ज्यों के त्यों इस देश पर लागू नहीं हो सकते। यदि लागू किये जाए तो हानि ही होगी । इसलिए भारत का आर्थिक विकास किस तरह हो, यहाँ की गरीबी, दरिद्रता, किस तरह मिटे इस दृष्टि से विचार करने पर पाश्चात्य सम्पत्तिशास्त्र के अनेक नियमों का प्रत्याख्यान करना होगा; और भारतीय दृष्टि का "सम्पत्तिशास्त्र' निर्मित करना होगा । द्विवेदीजी ने इस दृष्टि से सम्पत्तिशास्त्र का निर्माण किया है।

द्विवेदीजी कानपुर के जुही मुहल्ले में रहते थे। कानपूर उस समय के औद्योगिक शहरों में प्रमुख था। वे 'सम्पत्ति का स्वरूप' इस परिच्छेद में एक जगह लिखते हैं - "संसार में सम्पत्ति की बड़ी महिमा है। बिना संपत्ति के किसी का गुजर नहीं । सायंकाल, कानपुर में ख़ास ख़ास सड़कों पर घूमने जाइए । आप देखिएगा अच्छे अच्छे कपड़े पहने हुए लोग घूम रहे हैं। फिटन, टमटम, ट्राम, मोटर और पैर-गाड़िया दौड़ रही है। बड़ी-बड़ी दुकानों और कोठियों में लाखों रूपये का माल भरा हुआ है। उँचे मकान खड़े हैं । जगह जगह शिवालय और ठाकुर द्वारे बने हुए हैं । शहर के भीतर-बाहर कितने ही कल कारखाने जारी है। जहाँ देखिए वही सुख-समृद्धि के चिन्ह दिखाई देते हैं। पर कानपुर के पास किसी गाँव में जाइए । न गाडियाँ है, न घोड़े हैं, न कोई वैसी दुकाने न अच्छे मकान है। जहाँ देखिए उदासी छाई हुई है। इस अन्तर का कारण क्या है? कारण इसका वही सम्पत्ति है, और कुछ नहीं ।"[5] द्विवेदीजी के मन में गाँवों की गरीबी को लेकर तीखा दर्द था । वे भारत के किसानों की दयनीय आर्थिक दशा के तह तक पहुँचने के लिए 'सम्पत्तिशास्त्र' पुस्तक के 'लगान और मालगुजारी' परिच्छेद में विस्तार से विश्लेषण करते हैं। बाद में 'अवध के किसानों की बरबादी' नामक एक लम्बा निम्बन्ध उन्होंने लिखा था, जो दैनिक 'आज' में धारावाहिक रूप में प्रकाशित हुआ था। जिससे गाँवों की दिनोंदिन होती जाती बदतर दशा का अलग से विश्लेषण किया गया था। तत्कालीन लगान के संदर्भ में वे लिखते हैं "जमीन का लगान लेने की दो रीतियाँ है। एक तो रिवाज, दूसरी चढ़ा-उपरी किसी किसी देश में वहाँ के रीति-रिवाज के अनुसार, पैदावार का आधा तिहाई, चौथाई या पाँचवा, हिस्सा लिया जाता है। किसी किसी देश में लगान की मर्यादा चढ़ा-उपरी पर अवलब्ति रहती है। अर्थात जो सबसे अधिक लगान देता है वही जमीन पाता है और उसी की दी हुई रकम लगान की मर्यादा मानी जाती है।"[6]

आज हम जिस रूपये की किमत पर अनेक चर्चाएँ सूनते है। जिसमें रूपया गिरने-चढ़ने या कमजोर और मजबूत होने की बात सूनते है। रूपये की इस कीमत को द्विवेदीजी 'रूपये की कीमत' इस परिच्छेद में रूपये की कीमत कम ज्यादा कैसे तय होती है इसका विश्लेषण करते है- "हम लोगों को हमेशा चीजों ही की कीमत देनी पड़ती है। इसलिए रूपये की कीमत का नाम सुनकर यदि किसी को आश्चर्य हो तो हो सकता है। रूपये पैसे या सिक्के की कीमत से मतलब उसके अदला-बदल के सामर्थ्य से हैं। रूपया देने से जब और चीजे बहुत मिलती है अर्थात वे महँगी बिकती है, तब रूपये की कीमत कम होती है। अतएव रूपये में मोल लेने की जो शक्ति है वही उसकी कीमत है। रूपये की कीमत और अन्यान्य चीजों की कीमत एक दूसरी से विपरित भाव रखती है। अर्थात जब एक की कीमत घटती है तब दूसरी की बढ़ती है और जब दूसरी की बढ़ती है तब पहली की कम हो जाती है। उनका सम्बन्ध तराजू के पल्ले की तरह है। अर्थात एक उँचा होने से दूसरे को नीचे जाना ही चाहिए।"[7] इस तरह रूपये की कीमत का विनिमय उन्होंने अलग-अलग उदाहरणों के माध्यम से सहज और सरल भाषा में समझाया है।

जैसे कि हमने उपर देखा है कि द्विवेदीजी विदेशी अर्थशास्त्र के नियमों को भारत के अर्थशास्त्र में लागू नहीं होने की बात करते हैं । वह किस तरह से लागू नहीं किये जा सकते इसका विश्लेषण वे 'लगान' इस परिच्छेद में करते हैं - "ऑस्ट्रेलिया और अमेरिका में बहुत सी उपजाऊ जमीन पड़ी हुई है और मजदूरों की संख्या भी कम है । वहाँ आबादी बढ़ने से हानि के बदले लाभ होने की अधिक सम्भावना है। पर हिंदुस्तान की स्थिति वैसे नहीं । यहाँ बहुत कम जमीन परती रह गई है। मजदूरों की भी कमी नहीं है। अतएव यहाँ आबादी बढ़ने से देश का लाभ नहीं हो सकता । यहाँ गत तीस-चालीस वर्ष में जिस मान से आबादी बढ़ी है, उस मान से सम्पत्ति की वृद्धि नहीं हुई। उलटा सर्वसाधारण की उपजीविका के साधन घट गये हैं। करोड़ों आदमियों को दिन-रात में एक बार भी पेट भर खाने को नहीं मिलता । फिर यह देश कृषी-प्रधान है। खेती से ही निर्वाह करने वालों की संख्या यहाँ अधिक है। जमीन का उपजाऊपन पहले से बहुत कम हो गया है। लोगों के पास किसी तरह की पूँजी या अनाज का संग्रह नहीं है। एक ही फसल बिगड़ जाने से कृषी-जीवियों को या तो चार पाँच पैसे रोज पर सरकार कके इमदादी कामों पर मजदूरी करनी पड़ती है। या घर-घर भीख माँगनी पड़ती है। और समृद्धिशाली देशों की अपेक्षा यहाँ के भी आदमी की आमदनी आधी भी नहीं है। इस दशा में आबादी बढ़ने से देश की हानि या लाभ इसका अनुमान सहज ही में हो सकता है। यहाँ की साम्पत्तिक अवस्था ऐसी नाजुक है कि एक ही साल में अकाल से लोग दाने-दाने को मुहताज हो जाते हैं। उनके परिमित दानों के हिस्सेदारों की संख्या बढ़ना मानों दारिद्र की करालता और दुर्भिक्ष की भीषणता से देश का सर्वनाश होना है।"[8] इस तरह सम्पत्ति का विनिमय और देश की बढ़ती आबादी के कारण भारत का कितना नुकसान हो सकता है यह द्विवेदीजी विदेशी और देशी अर्थशास्त्र के नियमों के आधार पर समझाते हैं।

द्विवेदीजी बड़े कल-कारखानों, विज्ञान-टेक्नॉलॉजी के समर्थक थे। उनका मानना था कि भारत सिर्फ खेती एवं कुटीर उद्योग पर अवलंबित रहकर विकसित नहीं हो सकता। इसके लिए बड़े कल-कारखाने खोलकर बड़े पैमाने पर उत्पादन की पद्धति विकसित करने की जरूरत है। परंतु यहाँ व्यवसायी बड़े कल-कारखाने नहीं लगा पाते। इसका रास्ता सुझाते हुए द्विवेदीजी सलाह देते हैं कि कुछ लोग मिलकर कम्पनी खड़ी करे या लोगों को कारखाने का शेयर-होल्डर यानी हिस्सेदार बनाकर ऐसा करें तो यह सहज हो जाये । आज हिन्दुस्तान में अधिकांश कारखाने इसी तरह खड़े किये जा रहे हैं, परंतु द्विवेदीजी के समय में उनकी शुरूआत हो चुकी थी। 'सम्पत्तिशास्त्र' में 'व्यवसायी कम्पनियाँ अथवा सम्भूय-समुत्थान' परिच्छेद में उन्होंने इस विषय पर विस्तार से प्रकाश डाला है, तथा शेयरधारी की लाभ-हानि स्टॉक एक्सचेंज आदि पर भी लिखा है, जो आज भी प्रासंगिक है। "मिल जुलकर करने में बड़ी शक्ति है। जिस काम को अकेला आदमी नहीं कर सकता, कई आदमी मिलकर सुगमता से कर लेते हैं। विचारपूर्वक देखा जाए तो हिन्दुस्तान में शहरों की जाने दीजिए हजारों गाँव ऐसे मिलेंगे। जहाँ व्यापार-व्यवसाय और शिल्प की उन्नति सहज में हो सकती है। परंतु एक आदमी अकेले किसी बड़े काम को नहीं कर सकता और एक आदमी के पास इतना रूपया ही होता है कि वह बिना किसी की मदद के खुद ही उसे चला सके । ऐसे अवसर पर हमें कम्पनियाँ खड़ी करके काम करना चाहिए।... प्रबन्धकारिणी कमिटी के सभासद कम्पनी के जमा-खर्च की निगरानी किया करें, जिससे रूपये पैसे के मामल में गोलमाल न हो । इस प्रकार जहाँ जैसी आवश्यकता हो कम्पनियाँ खड़ी करके कोई भी काम या कारखाना सुगमता से चलाया जा सकता है, और यहाँ के मृतप्राय उद्योगधन्धों का पुनरूज्जीवन किया जा सकता है।"[9]

निष्कर्ष रूप में कहा जा सकता है कि द्विवेदीजी का अर्थशास्त्रीय चिन्तन यथार्थ और प्रासंगिक है। उन्होंने अर्थशास्त्र के सभी पैलूओं पर विस्तार से विचार-विमर्श किया है जिसमें जमीन, मेहनत, पूँजी, मालियत और कीमत, सिक्का, पदार्थों की कीमत, रूपये की कीमत, कागजरी रूपया, लगान मालगुजारी, सूद, मुनाफा मजदूरी, उद्योग, बैंक, बीमा आदि परिच्छेदों के माध्यम से 'सम्पत्तिशास्त्र' का निर्माण किया गया है जिसमें उन्होंने अपने अर्थशास्त्रीय विचारों का विवेचन और विश्लेषण किया है। जिस पर आज भी विस्तार से अनुसंधान कार्य होन की आवश्यकता है।

संदर्भ सूची :

1) महावीर प्रसाद द्विवेदी और उनका युग - डॉ. उदयभानु सिंह, लखनऊ विश्वविद्यालय, लखनऊ, 2008, पृ. 55

   Mahavir Prasad Dwivedi aur Unka Yug- Dr. Udaybhanu Singh, Lakhnow Vishvavidyalaya, Lakhnow, 2008, page 55

2) काशी नागरी प्रचारणी सभा द्वारा अभिनंदन ग्रंथ 'आत्म-निवेदन', खण्ड-5, परिशिष्ट-2, 2 मई 1933.

   Kashi Nagri Pracharini Sabha Dwara Abhinandan Granth 'Aatma-Nivedan', Khand-05, Parishisht-2, 2 May 1993

3) सम्पत्तिशास्त्र- महावीर प्रसाद द्विवेदी, भूमिका से

   Sampattishastra- Mahavir Prasad Dwivedi, Bhumika se

4) सम्पत्तिशास्त्र- महावीर प्रसाद द्विवेदी, भूमिका से

   Sampattishastra- Mahavir Prasad Dwivedi, Bhumika se

5) महावीर प्रसाद द्विवेदी रचनावली - संपा. भारत यायावर, खण्ड-06, किताबघर प्रकाशन, नयी दिल्ली, 2007, पृ. 34

   Mahavir Prasad Dwivedi Rachanawali - Sampa. Bharat Yayawar, Khand-06, Kitabghar Prakashan New Delhi, 2007, Page 34

6) महावीर प्रसाद द्विवेदी रचनावली - संपा. भारत यायावर, खण्ड-06, किताबघर प्रकाशन, नयी दिल्ली, 2007, पृ. 115

   Mahavir Prasad Dwivedi Rachanawali - Sampa. Bharat Yayawar, Khand-06, Kitabghar Prakashan New Delhi, 2007, Page 34

7) महावीर प्रसाद द्विवेदी रचनावली - संपा. भारत यायावर, खण्ड-06, किताबघर प्रकाशन, नयी दिल्ली, 2007, पृ. 101

   Mahavir Prasad Dwivedi Rachanawali - Sampa. Bharat Yayawar, Khand-06, Kitabghar Prakashan New Delhi, 2007, Page 101

8) महावीर प्रसाद द्विवेदी रचनावली - संपा. भारत यायावर, खण्ड-06, किताबघर प्रकाशन, नयी दिल्ली, 2007, पृ. 121

Mahavir Prasad Dwivedi Rachanawali - Sampa. Bharat Yayawar, Khand-06, Kitabghar Prakashan New Delhi, 2007, Page 121

9) महावीर प्रसाद द्विवेदी रचनावली - संपा. भारत यायावर, खण्ड-06, किताबघर प्रकाशन, नयी दिल्ली, 2007, पृ. 174

Mahavir Prasad Dwivedi Rachanawali - Sampa. Bharat Yayawar, Khand-06, Kitabghar Prakashan New Delhi, 2007, Page 174

****